B.ed 1st year, Unit-3
Paper-C2

डा० जाकिर हुसैन

जीवन परिचय :-

डॉ० जाकिर हुसैन का जन्म 8 Feb 1897 को हैदराबाद में हुआ था। अलीगढ़ से बी० ए० करने के बाद उन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में उच्च शिक्षा प्राप्त की। सन् 1920 में उन्होंने जामिया मिलिया की स्थापना अलीगढ़ में की जो बाद में दिल्ली स्थानान्तरित हो गयी। सन् 1926 से सन् 1948 तक वह इस संस्था के उपकुलपति रहे। सन् 1936 में वह बेसिक शिक्षा समिति के अध्यक्ष बने। सन् 1957 में वह बिहार के राज्यपाल नियुक्त हुए। सन् 1962 में वह भारत के उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए और सन् 1967 में भारत के राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए। वे पहले मुस्लिम राष्ट्रपति बनकर इतिहास बना दिये। एक शिक्षक होते हुए भी राष्ट्रपति जैसे पद तक वे अपनी योग्यता और प्रतिभा से पहुंचे थे। अपने एक भाषण में उन्होंने कहा था, भारत देश उनका घर है यहाँ सब उनके भाई-बहन है।

डॉ जाकिर हुसैन का शिक्षा-दर्शन :-

डॉ० जाकिर हुसैन ~~वास्तविक~~ वास्तविक शिक्षा आत्मानुभूति को मानते थे। वे मानते थे कि शिक्षा ही एकमात्र वह कारक है जो व्यक्ति का सन्तुलित विकास करती है।

वह शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य जीविकोपार्जन नहीं मानते थे। उनका कहना था कि शिक्षा तो मानव मस्तिष्क के पूर्ण विकास का नाम है।

वह कहते थे कि शिक्षा एक सतत गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें साध्य के साथ - साथ साधक भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वह मानते थे कि विद्यालय का यह कर्तव्य है कि वह बालक के स्वाभाविक शक्तिगत स्वरूप तथा उसके विकास की विशिष्ट अवस्थाओं का ध्यान रखें। मस्तिष्क, हृदय और कर्म इन तीनों पक्षों के विकास में ही व्यक्ति का विकास हुआ हुआ है। वह राष्ट्र में एकता एवं प्रगति का एकमात्र साधन शिक्षा को ही मानते थे।

डॉ० जाकिर हुसैन ने शिक्षा को पाँच स्तरों में विभाजित किया —

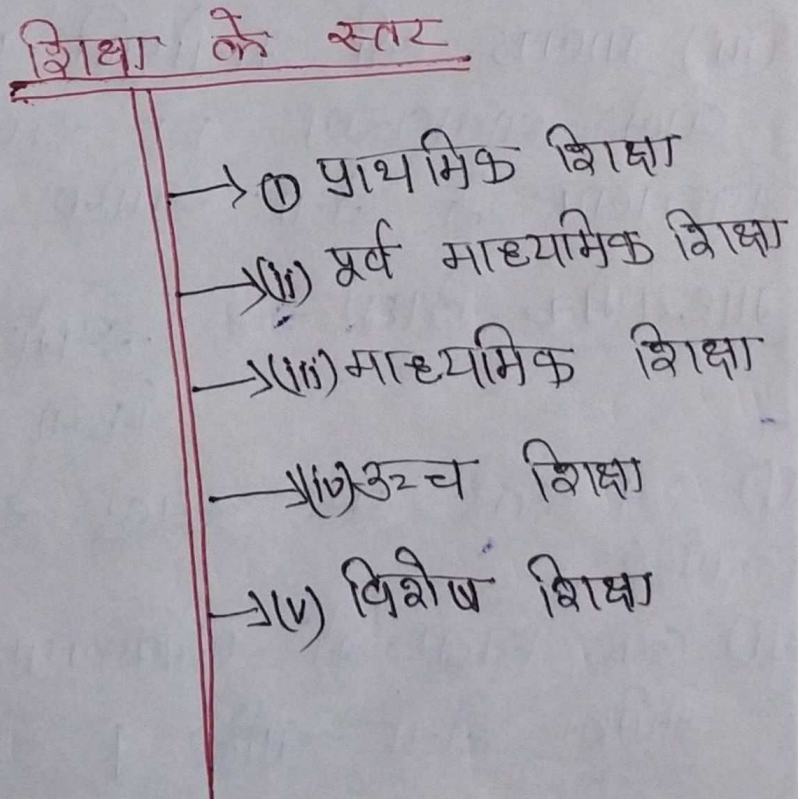

i) प्राथमिक शिक्षा ⇒ इसमें निम्न को सम्मिलित किया गया :

(i) इसमें बालक को शारीरिक विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

(ii) अच्छे वातावरण का सृजन होना चाहिए

(iii) शिक्षा में रचनात्मक तथा हस्तशिल्प का विशेष ध्यान होना चाहिए ।

(iv) 6 से 12 वर्ष तक निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए ।

2) पूर्व माध्यमिक शिक्षा ⇒

(i) राज्य को इसके प्रसार एवं उन्नति में पूर्ण सहायता देनी चाहिए ।

(ii) बालक को शारीरिक एवं मानसिक विकारों (हकलाना, दृष्टिकोण, सिरदर्द आदि) पर ध्यान देना चाहिए ।

(iii) बालक की मनोवृति पर सुप्रभाव डालने वाले वातावरण का सृजन परिवार एवं विद्यालय में होना चाहिए ।

3) माध्यमिक शिक्षा ⇒ इसमें निम्न को सम्मिलित किया गया –

(i) इस स्तर पर स्पष्ट सांस्कृतिक लक्ष्य रखना चाहिए ।

(ii) इस शिक्षा में जीविकोपार्जन का उद्देश्य भी शामिल होना चाहिए ।

(iii) क्रियात्मक पद्धति को अपनाना चाहिए।
(iv) रचनात्मक कार्य को प्राथमिकता देनी चाहिए।
(v) बालक की क्षमताओं एवं मानसिक शक्तियों के अनुरूप विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालय खोले जाने चाहिए।

1) उच्च शिक्षा ⇒ (i) विश्वविद्यालय को स्वायत्ता मिलनी चाहिए।
(ii) विद्यार्थी में सत्य की खोज और जिज्ञासा के प्रति झुकाव जगाना चाहिए।
(iii) विद्यार्थी में राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहिए।

2.) विशेष शिक्षा ⇒
(i) विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा अनिवार्यतः देनी चाहिए।
(ii) विज्ञान में धर्म तथा नैतिक मूल्य भी समाहित करने चाहिए तथा वैज्ञानिक प्रगति मानव के हित के लिए होगी।

डॉ० जाकिर हुसैन ने विद्यालयों को कार्यशाला के रूप में विकसित करने का अभिनव विचार भी प्रस्तुत किया। डॉ० जाकिर हुसैन के इस विचार का एकमात्र लक्ष्य शिक्षा को कर्म से जोड़ना था। वह मानते थे कि इससे ही मस्तिष्क स्वतंत्र रूप से विकसित हो सकता है।

शिक्षा के उद्देश्य

इन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताए –

1. व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करना ।
2. व्यक्ति को शाश्वत मूल्यों व आदर्शों, नीति की प्राप्ति और सांस्कृति उपलब्धियों से अवगत कराना ।
3. व्यक्ति के बाह्य जगत का साक्षात्कार करना ।
4. परिवर्तनशील विश्व समाज के अनुरूप बालकों को ढालने का प्रयत्न करना ।
5. बालक की मानसिक व शारीरिक शक्तियों का इस प्रकार विकास करना कि वह बाह्य जगत से सामंजस्य स्थापित कर सके ।

पाठ्यक्रम :-

डॉ॰ जाकिर हुसैन ने शिक्षा को प्रारम्भिक, पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक, उच्च एवं विशेष शिक्षा इन पाँच हिस्सों में विभाजित किया । हर स्तर पर उन्होंने पाठ्यक्रम में कर्म को शामिल किया ।

शिक्षण विधि :-

इनके द्वारा बतायी गई शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित है –

शिक्षणविधि

- स्वानुभव
- क्रियाविधि
- स्वाध्याय
- प्रयोग विधि
- प्रोजेक्ट एवं खेल विधि

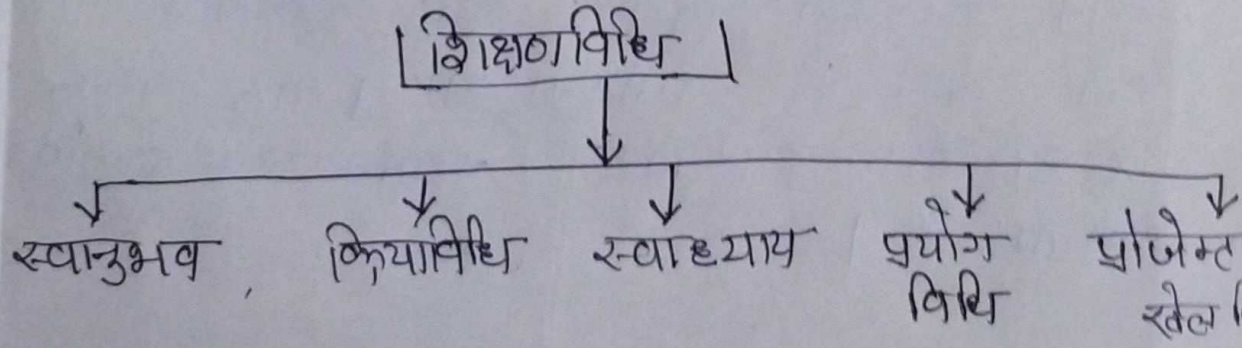

निष्कर्ष –

डॉ जाकिर हुसैन का शिक्षा दर्शन न केवल व्यापक है वरन् वह भारतीय जनजीवन के अनुकूल है। उनके शिक्षा दर्शन में भारतीय संस्कृति परम्परा और अतीत के साथ विश्व समाज की नई चुनौतियों को भी शामिल किया गया है। जामिया मिलिया उनका सार्थक प्रयोग माना जाता है। बालक में यथार्थता एवं पूर्णता लाने के लिए उनका कार्य का सिद्धान्त आज भी सार्थक है।

पंडित मदन मोहन मालवीय

जीवन परिचय ⇒

मालवीय जी का जन्म 25 सितम्बर 1861 ई को उत्तर प्रदेश के प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ था। उनके पिता पंडित ब्रजनाथ और माता श्रीमती मूना देवी मूलतः मालवा के रहने वाले थे। वे लोग प्रयाग में आकर बस गये थे और मलैया परिवार के नाम से प्रसिद्ध थे। धीरे-धीरे मलैया का शुद्धिकरण मालवीय हो गया और ये लोग मालवीय कहलाने लगे। उनके पिता ब्रजनाथजी संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। वे श्री मद्भागवत की कथा सुनाकर अपनी आजीविका अर्जित करते थे और उनकी माता को दुखियों की सेवा करने का स्वभाव प्राप्त हुआ था। महामना मदन मोहन मालवीय काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही साथ ही युग के आदर्श पुरुष भी थे। वे भारत के पहले और अंतिम व्यक्ति थे जिन्हें 'महामना' की सम्मानपूर्ण उपाधि से विभूषित किया गया। महामना मालवीय जी को संसार में सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वाधिक प्रिय था। मालवीय जी अपने कर्मों, वेशभूषा आचार-विचार से भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे।

पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातभाषा तथा भारत माता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिए तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर सके।

मालवीय जी का कहना था "सिर जाय तो जाय प्रभु मेरो धर्म न जाय"। ये ~~उनका~~ उनके जीवन का व्रत था जिसमें उनका व्यैक्तिक और सार्वजनिक जीवन समाज से प्रभावित था।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

शिक्षा के क्षेत्र में महामना का सबसे बड़ा योगदान काशी हिंदु विश्वविद्यालय के रूप में दुनिया के सामने आया था। मालवीय जी देश से निरक्षरता को दूर करने और शिक्षा के व्यापक प्रसार को देश की उन्नति के लिए आधार-शिला मानते थे, अतः उन्होंने शिक्षा पर अधिक बल दिया। वे स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। शिक्षा संबंधी अपनी धारणा को साकार करने के लिए उन्होंने एक महान विश्व विद्यालय की स्थापना की योजना बनायी और अपनी ईमानदारी, लगन व परिश्रम के कारण उन्हें इस कार्य में सफलता मिली। विश्वविद्यालय की स्थापना का कार्य सन् 1911 ई० में आरम्भ हुआ और 1912 ई० में इसका शिलान्यास हुआ। मालवीयजी लगभग 20 वर्ष तक इस विश्वविद्यालय के कुलपति का कार्य सुचारू रूप से ~~चलाते~~

कार्य किए। कुलपति का पद वे किसी लालचवश नहीं, वरन् विश्वविद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए किए। उसके बाद प्रसिद्ध दार्शनिक श्री राधाकृष्णन और समाजशास्त्री आचार्य नरेन्द्र देव कुलपति रहे।

इस विश्वविद्यालय में अनेकों विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है। विद्यार्थियों के शारीरिक मानसिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक विकास पर काफी बल दिया जाता है। अतः मालवीय जी के हृदय में शिक्षा के प्रति इतनी बड़ी लगन थी कि उनके द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय विश्व के महान विश्वविद्यालयों में अपना पहचान कायम किया है।

शिक्षा के उद्देश्य

मालवीय जी का मानना था कि उपयुक्त शिक्षा ही देश का सर्वांगीण विकास कर सकती है। वे देश तथा भारतीयों के पतन का मुख्य कारण निरक्षरता को मानते थे। वे शिक्षा को मानव विकास का मूलाधार मानते थे। इसलिए उनके अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास करना है।

शिक्षा का पाठ्यक्रम –

मालवीय जी ने शिक्षा के लिए एक विस्तृत पाठ्यक्रम का समर्थन किया। उन्होंने बालक तथा देश के विकास के लिए पाठ्यक्रम में साहित्यिक, वैज्ञानिक, व्यावसायिक एवं औद्योगिक विषयों को महत्वपूर्ण स्थान दिया। अपने पाठ्यक्रम में उन्होंने कृषि शिक्षा पर बल देते हुए कृषि के आधुनिक उपकरणों के उपयोग पर जोर दिया। संगीत व कला को भी सम्मिलित किया। इस प्रकार शिक्षा के पाठ्यक्रम में उन्होंने साहित्यिक, नैतिक एवं सौन्दर्यपरक तत्वों को सम्मिलित करने पर काफी जोर दिया।

निष्कर्ष :– इस प्रकार मालवीय जी ने शिक्षा एवं देश के प्रति बहुत बड़ा योगदान दिया है उनका मानना है कि हमारा देश तभी विकसित होगा जब हमारे देश में साक्षरता बढ़ेगी। उन्होंने ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास माना है, जब तक बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास सही ढंग से नहीं होगा तब तक निरक्षरता बनी रहेगी इसलिए उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों पर बल दिया है।